ॐ

गीत नं. 1

मेरा उद्देश्य हो प्रभु आज्ञा तेरी को पालना।
कर कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना।।
मानव के नाते से पिता, जाऊं कभी जो भूल मैं।
मेरी विनय है आपसे बनकर सखा संभालना।।
जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, श्रद्धा व प्रेम से करूँ।
आयें अभद्र भाव जो, उनको सदा ही टालना।।
रक्षा मेरी जो तुम करो, रक्षा तेरी में मैं रहूँ।
अपने गुणों के साँचे में, जीवन को मेरे ढालना।।
मृत्यु का मुझको भय न हो, मांगू यही वरदान मैं।
मेधा बुद्धि की भिक्षा को, झोली में मेरी डालना।।

गीत नं. 2

हम सब दाता मिलके, आए तेरे दरबार।
भर दो झोली सबकी तेरे पूर्ण भण्डार।।
होवे जब संध्या काल, निर्मल होके तत्काल।
अपना मस्तक झुका के, करके तेरा ख्याल।।
तेरे दर पर आके बैठे सारा परिवार······
लेके दिल में फरियाद करते हम तुमको याद।
जब हों मुश्किल की घड़ियां तुमसे माँगें इमदाद।।
सबसे बढ़ के ऊँचा जग में तेरा आधार·· ··
चाहे दिन हों विपरीत, होवे तुमसे प्रीत।
सच्ची श्रद्धा से गावें तेरी भक्ति के गीत।।

होवे सबका प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार······
तू है सब जग का वाली करता सबकी रखवाली।
हम हैं रंग-रंग के पौधे, तुम हो हम सबके माली ॥
पथिक बगीचा है यह तेरा सुन्दर संसार······

गीत नं. 3 :-

भला करो भगवान सबका भला करो।
तुम हो सारे जग के पालक।
मात पिता तुम, हम हैं बालक।
माँगें ये बरदान ॥ सबका······
सूरज-पृथ्वी चाँद-सितारे।
चमकें सारे न्यारे-न्यारे।
करें तेरा गुणगान ॥ सबका······
गर्भ में कैसे गात बनाओ।
गात बनाकर जोत जगाओ।
है बुद्धि हैरान ॥ सबका······
इसी बीज से फूल उगाए।
काँटे भी उस बीज में पाए।
कह न सके जबान ॥ सबका······
शुद्ध विचार कुटी में भर दो।
बुरी भावना दूर ही करदो।
हो सबका कल्याण ॥ सबका······
आशानन्द जब अन्त समय हो।
रोम-रोम से ओ३म की लय हो ॥
ओ३म कहें छूटें प्राण ॥ सबका······

गीत नं. 4 :-

भीतर है सखा तेरा, सखा मन टिका के देख।
अन्तः करण में ज्ञान की ज्योति जला के देख ॥

है इन्द्रियों की शक्तियां, बाहर की ओर जो।
बाहर कीं ओर से इन्हें भीतर को मोड़ दो ॥
कर द्वार सकल बन्द समाधि लगा के देख।
शुभ आत्मा से उसकी तू रचना का ध्यान कर ॥
निश्चय ही झूम जायेगा महिमा का गान कर।
श्रद्धा की देवी रूटी हुई है, मना के देख ॥
साथी पवित्र देव हूं बिगड़ी बने न क्यों।
जीवन यह तेरा भक्ति रस में सने न क्यों ॥
भांति आदर्श भक्तों की जीवन बना के देख।
मिलना है सखा तेरा, इस ही उपाय से ॥
मिलता नहीं कदापि वो, अन्यत्र जाये से।
ईश्वर की बाणी वेद कहें, आजमा के देख ॥

गीत नं. 5

कैसे हो कल्याण करनी काली है।
न होगा भुगतान हुण्डी जाली है।
तू तन का काला धब्बा, धो डालो लेकर पानी,
तेरे तन पर कितने काले धब्बों की पड़ी निशानी
क्यों न निहारी है·······
तेरा बिगड़ा पड़ा है इन्जन, गाड़ी किस भांति चलेगी
दीपक में तेल नहीं है, बत्ती किस भांति जलेगी
ये बुझने वाली है·······
तेरे अन्दर जान नहीं है, फिर देह किस भांति चलेगी,
तेरी टूटी पड़ी है नैया, कैसे वो पार लगेगी,
डूबने वाली है·······
नकली हुण्डी को जलादो, मन को शुद्ध बनालो
पीकर ओ३म का प्याला, दिल की प्यास बुझालो
महक मतवाली है·······

गीत नं. 6

जरा शरण में आजा आम् की, ये ओ३म करुणा निधान है ।
कण-कण में है ये रमा हुआ, पत्ते-पत्ते में ये विद्यमान है ।।
ऋषि मुनि पा इसको तर गए, योगी भी झोलियां भर गए ।
अन्त नेति-नेति है कर गए, ये नाम इतना महान है ।।
इस नाम से तू लगा लगन, दिन रात इसमें तू हो मगन ।
तुझे शक्ति इक मिल जायेगी, ये सर्वशक्तिमान है ।।
ले ले आसरा इस नाम का, बन जा भगत भगवान का ।
तेरे प्राण मुक्त हो जायेंगे, ये नाम मुक्ति का धाम है ।।
ये नाम इतना महान है, इसमें भरा विज्ञान है ।
स्वामी राम को इसकी पहचान है, लहरगंगा में करता गान है ।।
इस नाम में इतना असर, दुख, दर्द, पीड़ा का न कोई डर ।
इच्छा पूर्ण हो तेरी ईश्वर, मेरे देवता का प्रमाण है ।।

गीत नं. 7

विषयों का जो विषपान किए जा रहा है तू ।
खुद मौत का सामान किए जा रहा है तू ।।

आयु से पहले खत्म करके अपनी जिन्दगी ।
यमराज पे अहसान किए जा रहा है तू ।।

तेरे हाथ पाँव पर तेरा ही कुल्हाड़ा ।
खुद अपना ही नुकसान किये जा रहा है तू ।।

है चैन तेरे मन का सब पापों ने है लूटा ।
क्यों चोरों को मेहमान किये जा रहा है तू ।।

सदियों से आवागमन के चक्कर में नत्थासिंह ।
ब्रह्मा को भी परेशान किए जा रहा है तू ।।

गीत नं. 8

बुरे भले हैं बालक तेरे चरणों में आए हैं ।
भेंट आँसुओं की जगदम्बे आज चढ़ाने लाए हैं ।।

बे अन्त तेरी है लीला अन्त तेरा कोई पाए क्या ।
गायक भगवन तेरी महिमा इस वाणी से गाए क्या ।।
नेति-नेति योगी कहते इस दुनियाँ से धाए हैं ।।
बुरे भले……

जिसको मैं समझा था अपना वो दाता सब तेरा था ।
ज्ञान हुआ सत्संग में आकर पहले घोर अन्धेरा था ।
तू ही दे दे आज सहारा दुनियाँ से ठुकराये हैं ।।
बुरे भले……

जो-जो कर्म किए मैंने सबका तुझको ज्ञान है ।
तू तो मेरे रोम-रोम में रमा हुआ भगवान है ।
जग से छिपा लिए हैं तुझसे छिपते नहीं छिपाए हैं ।।
बुरे भले……

गीत नं. 9

नाम जपते चलो, काम करते चलो,
मेरे प्यारे, जन्म ये न मिले बारम्बार ।।
लाख चौरासी तूने पहनी खालें,
पृथ्वी आकाश देखी पातालें, कभी तू कीड़ा बना,
कभी आस्माँ उड़ा, डंडे मारे ।। जन्म ये………
इस नौका से था पार उतरना,
प्राणी मात्र की सेवा था करना
रक्षक भक्षक बना पेट अपना भरा ले कुल्हाड़े ।। जन्म ··
गाड़ीवान जब डंडे चलाए, आता जाता खड़ा हो जाये
अरे जालिम रहमकर, उस मालिक से डर, ओ हत्यारे ।। जन्म···
जनक ने सभा एक बुलाई, अष्टावक्र पण्डित आये भाई,
देख हंसने लगे अष्टावक्र जी कहे रे चमारे ।। जन्म···
संत कहा मां चुप हो जाओ, राख उस घर से जल्दी लाओ

जिस घर कोई न मरा, दूंगा बालक जिला, घर न मिला रे ।।जन्म
बाबा की जब चिता को जलाया, मूल की आत्मा को हिलाया,
जिस्म जाता है मर, आत्मा है अमर, ये खोजा रे ।। जन्म ये······
सब जूनों का सर ही झुका है, केवल शीश तेरा ऊंचा किया है
ऊंचे-ऊंचे काम कर, भव सागर से तर, मुक्ति पा रे ।। जन्म······
नेकि वदी आशानन्द, यहां रहनी, देह की राख गंगा में बहनी,
भगत जी कहते थे, सेवा में रहते थे, मुक्ति पा रे ।। जन्म ये······

गीत नं. 10

जगदीश्वर जगदीश पिताजी जीवन जोत जगा दे तू ।।
पाप किए मैंने अति भारी ।
विषयों में सारी उमर गुजारी ।
अपने पैर और अपनी कुल्हाड़ी ।
सच्चा मार्ग दिखादे तू ।। जगदीश्वर
दर-दर के मैंने धक्के खाये ।
देख लिए मैंने अपने पराए ।
तेरी बैठा आस लगाये ।
अपनी गोद बिठाले तू । जगदीश्वर
जो कुछ मेरा तुमसे पाऊं ।
तेरा दिया दिन रात मैं खाऊं ।
फिर क्या तेरी भेंट चढ़ाऊं ।।
अपने आर बतादे तू ।। जगदीश्वर
योगी जनों ने तुझको ध्याया ।
मन मन्दिर में तुझको पाया ।।
आशानन्द चरणों में आया ।
अमृत पान करा दे तू ।। जगदीश्वर

गीत नं. 11

ओम तेरा रखवाला है ओम ही पालन हारा है।
ओम नाम की प्यारे मनवा फेर तू निशदिन माला है॥
कोयल मैना और पपीहे उसके ही गुण गाते हैं।
पुष्प भी झुक झुक करें नमस्ते, पत्ते ताल बजाते हैं॥
रंग और रूप में, सागर ताल और कूप में,
चांद सितारे धूप में, ओम का ही उजियाला है॥ ओम तेरा
पाँच तत्व चुन-चुन करके ओम ने देह बनाई है।
हड्डी माँस और रक्त के ऊपर सुन्दर खाल सजाई है।
हाथ और पैर बनाये हैं, कैसे बाल उगाए हैं,
नयनों के दो दीप जला कर, पर्दा कैसे डाला है॥ ओम तेरा
सूर्य देवता क्रोध में आ जब अग्नि बाण चलाते हैं।
पृथ्वी पंछी प्राणी सारे पी-पी तुझे बुलाते हैं।
घनघोर घटाएं लाते हो, अमृत फिर बरसाते हो,
इन्द्रधनुष की माला को, आकाश गले में डाला है। ओम तेरा
हे देवता मन ये मेरा मुझसे धोखा करता है।
काम क्रोध मद लोभ का चक्कर मुझ पर आकर पड़ता है
आशानन्द को लो बचा, नौका परले पार लगा,
तेरे बिना न कोई मेरा, सब जग देखा भाला है॥ ओम तेरा

गीत नं. 12

प्यारा ओम, प्यारा ओम, प्यारा ओम, प्यारा ओम।
सब ऋषि मुनि हैं करते तेरा जपन,
और वेद भी गाते हैं तेरे भजन,
तेरे भक्त भी करते हैं यही यतन,
हम पापी पड़े हैं तेरी शरण॥ प्यारा ओम······

एक बार जो अमृत पीता है,
वो उसके सहारे पे जीता है,
जाता व्यर्थ समय तेरा बीता है,
देती शिक्षा हमें ये गीता है ।। प्यारा ओम······
भक्त प्रहलाद को जब सताते रहे,
और आग में उसको बिठाते रहे,
प्याले विष के भी उसको पिलाते रहे,
वो केवल यही शब्द गाते रहे ।। प्यारा ओम······
आओ प्रेम से उसको रिझायें सभी,
धूनी दाता के दर पे रमायें सभी,
आंसू प्रेम के आज बहायें सभी,
नन्द प्रेम के गीत ये गायें सभी, प्यारा ओम······

गीत नं. 13

ये दुनियाँ निराली सराय,
मुसाफिर कोई आये कोई चला जा रहा है ।
पर मुझको समझ में न आए,
प्रभु तेरा न्याय ये क्या गुल खिला रहा है ।।
एक दौलत खजानों का वाली,
एक का पेट रोटी से खाली ।
एक मेहनत करे फिर भी भूखा मरे,
एक गद्दी पर बैठा ही खा रहा है ।।
एक को हुक्म करने पे छोड़ा,
एक रिक्शा के आगे है जोड़ा ।
दूध कुत्तों को कोई पिलाये
कोई अपने बच्चों को आंसू पिला रहा है ।।
एक पंखे की लेता हवायें,

एक के पास हैं सर्व माहें।
एक बिजली के दीये जलाये,
एक बैठा अंधेरे में दिल जला रहा है ।।
एक को मिला मखमल पे सोना,
एक का पत्थरों पे बिछौना।
एक फूलों पर सोया भी बेचैन है,
एक कांटों पर भी मुस्करा रहा हैं ।।
नत्थासिंह क्या ये कर्मों का फल है,
या दुनियां ये धोखा या छल है।
या गरीबों का फोटो दिखाकर प्रभु,
कुछ अमीरों को करना सिखा रहा है ।।

गीत न. 14

कोई कीते नहीं उपकार भूमि ते हैं भार बन्देआ।
जिने तैनूं पैदा कीता ओनूं है बिसारिया।
रोवेंगा अन्त वेले कर्मा दे आ मारेआ।
किसी लैंणी नहीं तेरी सार ।। भूमि दे···
राम कृष्ण कैंण नाल कुछ नहीं ओ बनणा।
कर्म जेड़े कीते तैंने ओना आ के फड़ना।
ए कह रहे वेद पुकार ।। भूमि दे···
देख सुदामा नूं कृष्ण छालां मारदा।
मिट्टी ओहदे पैरां वाली केसां नाल झाड़दा।
अंखियां तों चल पई धार ।। भूमि दे···
हथ दिते रब ने दुःखी दा सहारा बन।
आजजां मसकीनां दा तू मित्र प्यारा बन।
पर फड़ लई तूने तलवार ।। भूमि दे···
किसी दुखी बीर दे बीरा कम आई तू।
किसी दुखी भैंण नूं गल नाल लाई तू।
नन्द हो जाएगा परले पार।

गीत न. 15

कर्म खोटे तो ईश्वर का भजन गाने से क्या होगा ।।
किया परहेज कुछ भी ना, दवा खाने से क्या होगा ।।
समय पर एक ही ठोकर बदल देती है जीवन को ।
जो ठोकर से भी नसम्भले तो समझाने से क्या होगा ।
समय बीता हुआ हरगिज कभी न हाथ आएगा ।
लिया चुग खेत चिड़ियों ने तो पछताने से क्या होगा ।
मुसीबत तो टले मर्दानगी के ही थपेड़ों से ।
मुकद्दर पे भरोसा रख के सो जाने से क्या होगा ।
तू मुट्ठी बांधकर आया और खाली हाथ जाएगा ।
पथिक मालिक करोड़ों का ये कहलाने से क्या होगा ।

गीत नं 16

ओ अभिमानी बन्दे, प्रीति कर ले ओम से ।
तजकर सारे धन्धे, प्रीति कर ले ओम से ।।
प्रातः सायं यदि प्रेम से ईश्वर के गुण गाएगा ।
सच्चे परमानन्द की पूंजी जीबन में भर पायेगा ।।
कट जाएंगे फन्दे ।। प्रीति करले ओम से······
करके हवन सुगन्धि दुर्गन्धि दूर भगाया कर ।
तन के मैल पसीने से न बदबू फैलाया कर ।
रोम रोम के गन्दे ।। प्रीति कर ले ओम से······
मानव तन अनमोल मिला है, तुझको इस संसार में ।
चांदी के सिक्कों के बदले बेच दिया बाजार में ।
अरे अक्ल के अन्धे ।। प्रीति कर ले ओम से······
लाख चौरासी कफनी पहनी फिर भी समझ न आई है ।
धरती को ठुकराया तूने, आकाश पे कोठी पाई है ।
फिर जायेंगे रन्दे ।। प्रीति······

खा न सकता एक निवाला बैंक कोठियां भरता रहा।
अर्थी तेरी यही उठाएं जिनकी खातिर मरता रहा।
सारे पुर्जे पड़ गये मन्दे ॥ प्रीति ...

गीत नं. 17

आज मेरी वाणी तू ओम से ही प्यार कर।
ओ३म के ही चप्पू से नैया को पार कर ॥
वाटिका में सुन्दर फूल किसने खिलाये हैं।
सूरज चांद तारे सारे किसके इशारे हैं।
आंखों के किवाड़ मूंद मन में विचार कर ॥ ओम के.......
अमृत के वेले में अमृत का पान होता।
मस्ती में झूम जाये मेल भगवान होता।
बैठा रहता आठों याम झोली को पसार कर ॥ ओम के...
आत्मा जब तेरा परमात्मा में लीन होता।
सारा कारखाना फिर उसके अधीन होता।
ईश्वर इच्छा पूर्ण हो कहते हैं पुकार कर ॥ ओम के.......
गोली लाठी और भाले उन पर न वार करते।
विष भरे प्याले भी कुछ न बिगाड़ करते।
चिता की भी राख जाते खेतों में डालकर ॥ ओम् के.......
सच्चे जो भक्त होते शत्रु से भी प्यार करते।
कातिल को भी धन देकर उसका भी उद्धार करते।
दयानन्द जा रहे हैं जीवन को वार कर ॥ ओम् के...
'आशानन्द' तू तो खाली भजन बनाता रहा।
समय अनमोल अपना व्यर्थ गंवाता रहा।
बीती बात भूल जा, रही का सुधार कर ॥ ओम् के.......

गीत नं. 18

तेरी रहमतों का सहारा न होता।
तो दुनियां में मेरा गुजारा न होता ॥

तेरी बखशशों से मैं जिन्दा हूं मालिक।
तेरी बन्दगी से बन्दा हूं मालिक।
वरना जहां को गंवारा न होता ।। तेरी रहमतों··· ··
मैं अल्पज्ञ हूं सदा भूल जाता।
ठोकर लगे ना तू दीपक जगाता।
यदि तू न होता कोई हमारा न होता ।। तेरी रहमतों·······
तेरे भक्त विष को पी मुस्कराते।
प्रभु इच्छा पूर्ण हो यह गाने सुनाते।
तुझे भक्त, तू भक्तों का प्यारा न होता ।। तेरी रहमतों···
यह संसार सागर भंवर जाल घेरा।
घटा टोप पापों का छाया अन्धेरा।
तेरी ज्योति का गर सितारा न होता। तेरी रहमतों······
यह जीवन की नैया है तेरे हवाले।
तू चाहे डुबो दे चाहे तरा ले।
तो मैंने भी तुझे पुकारा न होता ।। तेरो रहमतों······

गीत नं. 19

जब ही मुख मन्दिर खोले, इक ओम् प्यारा ओम् प्यारा बोले।
ब्रह्म मुहुर्त में उठकर जो, शरण प्रभु की आयेगा,
मैल मिटेगी सब मन की अमृत ही भर जायेगा,
उठ पापी पाप को धोले रे ।। इक ओम् प्यारा······
सूर्य चांद से देवता भी, झुक-झुक करें इशारे।
वृक्ष फूल पत्ते सारे, चूमें चरण तुम्हारे।
अब तू भी उसी का होले रे ।। इक ओम् प्यारा···
पत्ता-पत्ता ही उसका, पता हमें देता है
जिसने जैसा कर्म किया, फल वैसा ही लेता है।
उठ बीज पुण्य के बोले रे ।। इक ओम् प्यारा··

आशानन्द तू होश में आ, भूल जा बातें बीती।
सेवा सत्संग में लग जा, हारी बाजी जीती।
क्यों इधर उधर मन डोले रे ॥ इक ओम् प्यारा......

गीत नं. 20

चरणों में आया मैं तेरे विनय मेरी स्वीकार करो।
इस नाव के खेवनहारे हो चाहे आर करो चाहे पार करो ॥
मानव चोले को धारण कर पशुओं से भी शर्मिन्दा हूं।
सर भार है भारी पापों का अब हल्का मेरा भार करो ॥
मन में कुछ और वचन कुछ और कर्म कुछ और मैं करता रहा
मेरा खाता जब तुम खोलो तो दया दृष्टि सरकार करो ॥
औरों पे उंगली एक उठी पर तीन हैं मुझपर बरस पड़ी।
औरों के पाप तलाश करे कुछ अपना आप सुधार करो ॥
छल कपट पाप अन्याय से इस लोक में मैं धनवान बना।
पर लोक सफर भारी सर पर कुछ तो सामान तैयार करो ॥
निगम बोध पर चल देखो लाशों के हैं अम्बार लगे।
धन के अम्बारों वालों तुम किस बात का अब अहंकार करो।
भजन बनाते वृद्ध भया कुछ अपना आप बना न सका।
आशानन्द थोड़े दिन बाकी अब सच्चे प्रभु से प्यार करो ॥

गीत नं. 21

ओ बन्दे होश कर, ओ बन्दे होश कर
चित्त भैड़े पासे लाके, पापाँ विच उम्र गंवाके
समय गंवाना एं। ओ बन्दे......
ए सोहणी मोहणी माया झलक दिखाई ए
ईश्वर नूं दिलों भुलाके करे कमाई ए
निर्धन दा खून निचोड़ के बैठा, धर्म कर्म नूं छोड़ के
पाप कमाना एं ॥ ओ बन्दे......

ऐ चौधर वालियां गल्लाँ, रखनूं भाईयां न
पर बीतियां, तैंने सजना, नेक कमाइयाँ न
बूटा धर्म कर्म दा पुटके, हक यतीमाँ वाला लुटके
कोठियाँ पाना ऐ ॥ ओ बन्दे......

तू बे-जबान उत्ते जुल्म क्यों ढाना ऐं
तू बकरे मुर्ग, फड़ के छुरे चलाना ऐं
ओहदा भुन कबाब बना के, नाले शराब दा घुट चढ़ाके
मजे उड़ाना ऐं ॥ ओ वन्दे......

ए खोटा कर्म जो कीता, अग्गे आणा जे
ए कीता अपणा आप, जो सबने पाणा जे,
बदियां तों मुख तूं मोड़ी, प्रेमी ईश नाल नाता जोड़ी
स्वर्ग नूं जाणा रे...

गीत नं. 22

आजकल का मानव गीत

बिगड़ी है हालत प्रभु तेरे इन्सान की।
करना था क्या और क्या कर रहा है ॥

भाई आज भाई पर जुल्म ढा रहा है।
और कृष्ण सुदामा के गीत गा रहा है।
हालत देख कृष्ण प्यारे अपनी सन्तान की।

मंडी में भारी एक फर्म लाला जी की।
पीस रखी हैं ईंटें और शोभा हल्दी की।
भूला है शक्ति उस सब शक्तिमान की ॥

पौष्टिक पदार्थ को भी इसने नष्ट किया।
दूध, घी, शहद को भी इसने भ्रष्ट किया।
खाता है कसमें अपनी सन्तान की ॥

लस्सी में स्याही चूस हमको पिला रहा।
शर्बत में सैक्रीन डाल पैसा ये कमा रहा।
दशा कैसे सुधरेगी ऋषि सन्तान की॥

तीर्थ तथा मेले मैं जाने वाले (गीत नं. 23)

तीर्थों पर आने वालो, मेरी बातों का ध्यान करो।
देवता कहलाने वालो, मेरी बातों का ध्यान करो॥
तुम जो आए मेले में कुछ छोड़ मैल को जाओ तुम।
माँस मदिरा बीड़ी सिग्रेट मन से दूर हटाओ तुम॥
आँख गर्माने वालो॥ मेरी बातों का…
केले आम और और खरबूजे बड़े मजे से खाते हो।
पर बाजार में चलते-चलते छिलके वहीं गिराते हो।
भाइयों को रुलाने वालो॥ मेरी बातों का…
जिन्दा मां को जूता मारो, गंगा मैया की जय बोलो।
मन में तो है भरी गन्दगी देह गंगा जल से धोलो।
ईश्वर को बहकाने वालो॥ मेरी बातों का…
मेहनत और मजदूरी करके फिर भी ठेके जाते हो।
घर की नारी नंगी फिरती कैसे बोतल लाते हो॥
पिक्चर में जाने वालो॥ मेरी बातों का…
ईश्वर को जो मिलना चाहो उसकी तुम पहचान करो।
कृष्ण निर्धन को गले लगाते तुम उनका अपमान करो।
धनवान कहलाने वालो॥ मेरी बातों का…
कंकड़, छिलका मिले मार्ग में उसे उठाते तुम जाना।
ठेला, रिक्शा अड़ा हुआ हो देते सहारा तुम जाना।
भला कमाने वालो॥ मेरी बातों का…
आशानन्द आशीष माँगता जो कहता मैं कर जाऊँ।
प्राणी मात्र की सेवा खातिर मरना पड़े तो मर जाऊँ॥
मेरे गीतों को गाने वालो॥ मेरी बातों का…

गीत नं. 24

करने आए थे क्या, अब तलक क्या किया।
ये विचारें जीवनों पे तनिक दृष्टि डालें ।।
सावधानी से सत्य को पहचानें,
जो जो त्रुटियां हैं इनको भी जानें।
दोष कर दूर दें, सच्चे आर्य बनें, जग सुधारें ।। जीवनों पे···
भोग जग के हमारे लिए हैं, देने वाले ने हमको दिए हैं।
भोगों में न सने इनके स्वामी बनें, मौजें मारें ।। जीवनों पे···
दिल से पितरों की आज्ञा को पालें, स्वर्ग संसार अपना बनालें।
जीवन सफल करें, तार जग को तरें, ऋण उतारें ।। जीवनों पे···
लक्ष्य योगी का जीवन बनाकर गढ़ अविद्या के सारे गिराकर।
देवता बन रहें, दुःख से न डरें व्रत ये धारें ।। जीवनों पे···

गीत नं. 25

आए हैं प्रभु जी द्वार तेरे तू सब दुनियां का वाली है।
ये पत्ता २ देता पता और कहती डाली २ है ।।
मैं जाने और अनजाने भी यह पाप सदा हूं करता रहा।
अल्पज्ञ हूं मैं सर्वज्ञ है तू बन्दा न भूल से खाली है ।।
कहते हैं त्रिलोकीनाथ तुझे त्रिलोकी का तू प्रबन्धक है।
मुझसे तो छोटी सी कुटिया न जाए प्रभु सम्भाली है ।।
भुगतान करो मेरे पापों का तो सहन शक्ति भी दे देना।
यजमानों ने यज्ञ कर करके भिक्षा की झोली डाली है ।।
अब मेधा बुद्धि दो भगवान मानव चोले को सफल करूं।
जब कूच करूं इस दुनियां से कोई दे ना मुझको गाली है ।।
मेरे तन के दुखड़े दूर करो मन मस्ती से भरपूर करो।
आशानन्द विनय मंजूर करो तेरे दर पर अलख जगा ली है ।।

कव्वाली गीत नं. 26

आर्यो संसार का उद्धार करना है तुम्हें ।
मौत से जीने की खातिर प्यार करना है तुम्हें ।
वेद की ज्योति से जग को जगमगा दो आर्यो ।।
पाप के पर्वत को तुम भू पर गिरा दो आर्यो ।
अज्ञान के संसार का संहार करना है तुम्हें ।। मौत से…
स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों की तुम तस्वीर हो ।
बन्दा बैरागी हो तुम और लेख जैसे वीर हो ।।
सोये अरमानों को फिर बेदार करना है तुम्हें । मौत से…
बाग अपने को ही अपनों ने लगा दी आग है ।।
प्रीत का संगीत एक बीता पुराना राग है ।
डगमगाता आज बेड़ा पार करना है तुम्हें ।। मौत से…
कौन माता के मिटाएगा अरे सन्ताप को ।
आग में डालेगा तुम बिन कौन अपने आप को ।
आज अपने आप को तैयार करना है तुम्हें ।। मौत से…

शहीद स्वामी श्रद्धानन्द की इच्छा गीत नं. 27

मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे बसन्ती चोला ।
यही रंग रंगाने श्रद्धानन्द श्रद्धा से यहां आते हैं ।
हिन्दू जाति की खातिर, प्राणों की भेंट चढ़ाते हैं ।
कातिल ने पी पीकर पानी, फिर पिस्तौल को खोला ।। मेरा…
इस चांदनी चौक के अन्दर, घंटाघर था खड़ा हुआ ।
घंटाघर के नीचे लोगों, शेर बबर था खड़ा हुआ ।
खोलो गन मशीनें खोलो, मैंने सीना खोला ।। मेरा…
जामा मस्जिद के मंबर पर, स्वामी जी जब आते हैं ।
दयानन्द की जय के नारों से, आकाश गुंजाते हैं ।
मस्जिद में छा गया सन्नाटा, वेद मन्त्र जब बोला ।। मेरा…

जलियाँ वाले बाग के अन्दर, कौन मोर्चे पर आया।
कांग्रेस का अध्यक्ष बना, और हिन्दी को अपनाया।
अली बिरादर और गांधी के, आगे वो ना डोला।। मेरा···
गंगा और यमुना की धरती, इनको मूल न भाति है।
अरब की रेत और ऊँट की बोली, इनको खूब सुहाती है।
इसी वास्ते गाते फिरते, मदीने बुला ले मौला ।। मेरा···
तुम्हें सौगन्ध उस लहू की, आर्यो धर्म निभाओ तुम।
गिरा है शुद्धि का ये झंडा, इसको फिर उठाओ तुम।
आर्य समाज 'आशानन्द' कहता, है ये शहीदी टोला।। मेरा···

गीत नं. 28

श्रद्धा का श्रद्धानन्द भंडार तुमको भूल गया है।
जाती का सच्चा खिदमतगार, तुमको भूल गया है।।
गर्दन में झोली डाली, दर-दर का बना भिखारी।
गंगा का गुरुकुल करे पुकार ।। तुमको···
अपना सर्वस्व लुटाया, बिछुड़ों को गले लगाया।
पतितों का कर गया बेड़ा पार।। तुमको···
गोरे के होश उड़ गये, तोपों के मुँह भी मुड़ गए।
देहली का चांदनी चौक बाजार।। तुमको···
जामा-मस्जिद के अंदर, स्वामी जी बैठे डटकर।
वेदों का करते हैं प्रचार।। तुमको···
कातिल सरहद से आया, अन्दर पिस्तौल छुपाया।
स्वामी जी कई दिन से बीमार।। तुमको···
खूनी की प्यास बुझाई, हँस हँस के गोली खाई।
ओ३म की बाजन लगी तार।। तुमको···
कर्जा है उनका चुकादे, प्राणों की भेंट चढ़ादे।
आशानंद होता तब प्रचार।। तुमको···

गीत नं. 29

दयानन्द की जय कहने से, होनी जय-जयकार नहीं।
जब तलक निज जीवन पर तू करता सोच-विचार नहीं ॥
जीवन और मृत्यु की उलझन, बन्दे ना सुलझाएगा।
है तू कौन, कहां से आया, और कहां को जाएगा।
लोक और परलोक का प्यारे, खुलना बिल्कुल द्वार नहीं ॥ 1
गर्भ में था इक मांस लोथड़ा, बच्चा बढ़ा और वृद्ध हुआ।
बहत्तर कोटि नाड़ी सिद्ध करली, पर स्वयं ना सिद्ध हुआ।
मैं तो खुद को खोज खो गया, मुझको मेरा दीदार नहीं ॥ 2
कुटिया में कुटिया बन्द करके, और फिर आसन ले लेगा।
पशु पुरुष का प्रश्न खुलेगा, मन मन्दिर की जोत जला।
ये मानव का चोला प्यारे, मिलता बारम्बार नहीं ॥ 3
आत्मा तेरा परम आत्मा से जब ही जुड़ जाएगा।
परमाणु परमाणु में प्रमाण प्रभु का पाएगा।
कमल की भाँति जल में रहेगा, पर इस जल से प्यार नहीं ॥ 4
लाख चौरासी का सिर नीचा बुद्धिहीन बनाया है।
तेरा शीश लगाकर ऊपर, ऊपर तुझे बुलाया है।
हिम्मत कर पग आगे बढ़जा, जीती बाजी हार नहीं ॥ 5
आत्म चर्चा करने को इक जनक ने सभा बुलाई है।
अष्टावक्र ऋषि जब आए, सबने हंसी उड़ाई है।
यह तो सभा चमारों की है, पण्डित और आचार्य नहीं ॥ 6
मूल को अपना मूल मिल गया, मूल से नाता जोड़ते हैं।
जिस्म हो गया सारा छलनी, सब सम्बन्धी छोड़ते हैं।
तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभु, आने में इन्कार नहीं ॥ 7
अपनी आत्मा का सम्बन्ध, परमात्मा से जोड़ रहे।
हाड़ मांस और खून के रिश्ते, आशानन्द अब तोड़ रहे।
भिक्षा मांग भण्डारी से, उस जैसा कोई द्वार नहीं ॥ 8

गीत नं. 30

दयानन्द के भक्तों, पुनः परीक्षा आई।
कि भारत में बढ़ने लगे हैं इसाई॥
इसाई तेरे देश में गर बढ़ेंगे।
तेरे देश के और टुकड़े करेंगे।
तेरे सामने तेरे बच्चे मरेंगे।
भविष्यवाणी तुमको मैं देता सुनाई॥
तेरे देश में पादरी आ रहे हैं।
पैसे का वो जाल फैसा रहे हैं॥
तेरे बच्चे उनमें मिले जा रहे हैं।
न जाने तुम्हें क्यों नहीं होश आई॥
श्रद्धानन्द ने खाई बताओ क्यों गोली।
मुसाफिर भी खेला लहू से क्यों होली।
इकलौते की उसने ना अर्थी उठाई॥
दयानन्द की अग्नि से लेकर अंगारे।
उठो आर्य वीरो कफन बांधो सारे।
दक्षिणा में जीवन धरो भेंट प्यारे।
आशानन्द को मां की ये आवाज आई॥

गीत नं. 31

ऋषिवर दयानन्द जगाने को आए।
वो भारत का संकट मिटाने को आए॥
आलस की निद्रा में मदमस्त थे जो।
उन्हें फिर से ठोकर लगाने को आए।
जो थे भूल बैठे वेदों की वाणी।
उन्हें वेद अमृत पिलाने को आए॥

सुनी आहोजारी यतीमों की उसने ।
अछूतों को छाती लगाने को आए ।
भलाई का बदला भला क्या दिया है ।
ऋषिवर को हम विष पिलाने को आए ।।

गीत नं. 32

सीधा राह दिखलाया सच्चे साधु ने ।
इक ईश्वर दी पूजा सिखाई ।
सुन्दर वैदिक ज्योति जलाई ।
वेद अमृत बरसाया ।। सच्चे साधु ने···
वेदों का पढ़ना और पढ़ाना ।
देश पे जीवन भेंट चढ़ाना ।
देश भगत बनवाया ।। सच्चे साधु ने···

युग अपना मुख खोल रहा है ।
दलितों का दिल बोल रहा है ।
आदर मान बढ़ाया ।। सच्चे साधु ने···

वेद देवियां पढ़ सकती हैं ।
रणभूमि में लड़ सकती हैं ।
मातृ मान बढ़ाया ।। सच्चे साधु ने···

दु:खियों के दु:ख हरने वाला ।
विष पी-पी कर मरने वाला ।
जीवन सफल बनाया ।। सच्चे साधु ने···
आओ प्यारे वीरो आओ ।
करजा ऋषि का आज चुकाओ ।
आर्य समाज बनाया ।। सच्चे साधु ने···

गीत नं. 33

सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से, ये बुद्धि निर्मल होती है।
अज्ञान नष्ट हो जाता है, सद्ज्ञान की जलती ज्योति है।।
कल भूखा शंकर मन्दिर में, कहें सृष्टि करता शंकर है।
शिवरात्रि को लीला देखी, तो कहने लगे ये तो कंकर है।
इस अंधविश्वास के कारण ही, सोमनाथ की धरती रोती है।
दुनियाँ के सारे ग्रन्थों को योगी ने खूब निचोड़ा है।
झूठे मत-मतान्तरों का, भाँडा चौराहे पे फोड़ा है।
तर्कों के तीरों से तीर हुए, तरकश में वेद कसौटी है।।
मूल समुल्लास में मूल ने ही, सृष्टि का मूल दर्शाया है।
सातवें आसमाँ पर डटा नहीं, न चौथे में ही पाया है।
जर्रे-जर्रे से जाहिर है, दुनियाँ बन बन में जोहती है।।
उपनिषद वेद और दर्शन का तू दर्शन इसमें पाएगा।
ये लोक भी तेरा सुधरेगा परलोक में आनन्द आएगा।
हर आत्मा वो है फल खाती, जो बीज ही जैसा बोती है।।
ये चौदह गोली का पिस्टल, जिसकी पाकिट में आएगा।
भय भूत सभी भग जाएगे, जादूगर वो बन जाएगा।
जाति-जाति बच जाएगी, महाभारत से जो सोती है।
महर्षि से बातें करनी हों, रोजाना सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो।
फिर जो-जो मन में संशय उठें, इस ग्रंथ से फौरन उत्तर लो।
इसका पन्ना-पन्ना 'पन्ना' है और अक्षर "मोती-मोती" है।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने भी इसे जीवन में अपनाया है।
लेख राम मुसाफिर ने अपना सर्वस्व लुटाया है।
सच पूछो बाल हकीकत ने सत् पथ ही सर कटवाया है।
झूठे जयकारे बोल रहे, न जन्जू है न चोटी है।।
सत्यार्थ के उस लेखक ने, जो लिखा करके दिखाया है।

शिवरात्रि ने इसे जगाया था, दिवाली ने इसे बुलाया है।
प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो अन्त समय ये गाया है।
आशानन्द भारत माता आज अश्रुअन के हार पिरोती है ॥

गीत नं. 34

ए आर्यों मेरी नमस्ते हो इस जग से अब मैं जाता हूं।
ईश्वर की इच्छा के आगे मैं अपना शीश झुकाता हूं ॥
अब ओम-ओम रटने लागे दीपक से अन्तिम लपट उठी।
प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो चरणों में आपके आता हूं ॥
विष देने वाले को योगी अब प्रेम से गले लगाते हैं।
ओ जगन्नाथ क्यूं रोता है तेरे भी प्राण बचाता हूं ॥
जब चिता मेरी हो ठण्डी तो हड्डियों को शीघ्र उठा लेना।
जा खाद डालना खेतों में बस यही आर्यो चाहता हूं ॥
किया प्राणायाम उस देवता ने और प्राण पखेरू निकल गए।
नन्द लाखों प्राणी रोते हैं दीवाली को जब गाता हूं ॥

गीत नं. 35

हर कदम पे आयो, मुस्कराते तुम चलो।
सोम रस ये स्वास्थ्य का पीते पिलाते तुम चलो ॥

जिस जगह रहते हो तुम, वातावरण प्रतिकूल हो।
गृहणी का हो गृह लगा, और फूल त्रिशूल हो।
इतर की बरसात हो या सर पे पड़ी धूल हो।
फिर भी मेरे दोस्तो गुनगुनाते तुम चलो ॥

अगर तुम रोगी हो व्यायाम कर सकते नहीं।
सर हिला सकते नहीं और पग भी धर सकते नहीं।
डाक्टरों और सर्जनों की फीस भर सकते नहीं।
बैठ कर शीशे के आगे चहचहाते तुम चलो ॥

इस दवाई से तेरी दुःख की घड़ी टल जाएगी ।
आत्मा भी शाँत होगी, देह भी सुख पायेगी ।
'विल पावर' जो छुपी है, वो उभर कर आयेगी ।
योगियों का है ये नुस्खा, आजमाते तुम चलो ।।

रात काली जायेगी, सूरज ने आना दोस्तो ।
दुःख भी है सुख की निशानी न भुलाना दोस्तो ।
जिन्दगी में बोल मेरा आजमाना दोस्तो ।।
रंजो गम को मारो ठोकर, दनदनाते तुम चलो ।।

मैं और तुम क्या चीज है ईश्वर को गाली दें सुना ।
दे दो तुम सर्वस्व अपना फिर भी उंगली लें उठा ।
वह धर्म अपना न छोड़े तू धर्म क्यों छोड़ता ।
इसलिए मस्ती की मय पी, पग बढ़ा तुम चलो ।।

भगतसिंह, दयानन्द, हकीकत, मृत्यु का स्वागत कर रहे ।
जिदगी और मौत आशानन्द दोनों लड़ रहे ।।
इस जहां को छोड़कर, नए छोर पर पग धर रहे ।
प्रभु इच्छा पूर्ण हो, विष को उड़ाते चलो ।।

भारती बालक गीत नं. 36

संतान हैं हम उन वीरों की, भारत को वीर बनाएंगे ।
हम दर्द बनेंगे निश्चय ही जो कह देंगे, कर जाएंगे ।।

जानो मत छोटे बालक हैं, आधार शिला हैं जाति की ।
जिस ओर भी करवट बदलेंगे, बिगड़ी हर बात बनायेंगे ।।

इतिहास सुने हैं लोरियों में, त्यागी और जवानों के ।
हम उनके ही तो बच्चे हैं, आने दो समय बतायेंगे ।।

पर्वत भी झुके वायु भी रुके, कह देंगे समुद्र थम जाए ।
संसार को हरकत दे देंगे, हरकत में जिस दिन आएंगे ।।

धारेंगे रूप हकीकत का, और मौत के संग हम खेलेंगे ।
है प्रेम धर्म की क्या वस्तु, आने दो समय बताएंगे ।।

श्रवण कुमार गीत नं. 37

पिता माता मेरे प्यासे, उन्हें पानी पिला देना।
किया है प्यास ने व्याकुल, पिला पानी बचा देना॥
न पीलें जब तलक वह जल, ऐ राजन, मौन रह जाना।
मेरे पर ऋण है सेवा का, श्रवण बनकर चुका देना॥
गई है टूट अब लाठी बेचारे नेत्रहीनों की।
जहाँ तक हो सके फिर भी; उन्हें जा हौंसला देना॥
मेरी जब चल पड़े चर्चा, बिना संकोच के राजन।
मेरी मृत्यु की फिर सारी घटी घटना सुना देना॥
करें इच्छा मेरे मिलने की, इतना कष्ट कर देना।
किसी साधन से प्रीति से, उन्हें इस जा पहुंचा देना॥
है सम्भव मिल के हम तीनों ही अपने प्राण दे देवें।
तो हम तीनों की ऐ राजन, चिता सोभी जला देना॥

हिन्दी भाषा गीत नं. 38

हिन्दियों की शान हिन्दी, हिन्दियों का प्राण है।
हिन्दी की रक्षा करना हिन्दुओं का काम है॥
सूरदास, मीराबाई जब वीणा खोलते थे।
हिन्दी के ही मीठे मीठे पद प्यारे बोलते थे।
हिन्दी का ही रस लेता कवि रसखान है॥
हिन्दी में हिन्दी वीरो, राष्ट्रगान गाते हो।
भारत माता की हो जय, हिन्दी में बुलाते हो।
माँ का मिटाये नाम, कैसी संतान हैं॥
आशानन्द बच्चों को जो शिखर पे चढ़ाना चाहो।
आरम्भ से बालकों को हिंदी का ज्ञान कराओ।
कला कौशल शास्त्र का सब हिन्दी में ही ज्ञान है॥

वीर बालक गीत नं. 39

भारत माँ के लाल कि जिनकी उम्र थी नौ-नौ साल
वीर कहलाते थे ।
हाथ में लेकर भाल, सामने आ जाए गर काल
वहीं डट जाते थे ।।
धर्म की निशानी, चोटी जन्जू थी हमारी
जीते जी न उतारते थे ।
बच्चों का ही खेल, मौत जिन्दगी का मेल
जान हँस-हँस के वारते थे ।
भला मृत्यु की कहां मजाल, कि काटे चोटी का इक बाल
आप कट जाते थे ।।
नन्हें नन्हें सुकुमार हाथ में लेकर कटार
जंग में जो ललकारते थे ।
बालकों की शान देखो, बड़े बलवान देखो
आगे दम नहीं मारते थे ।
भला आ गया कोई भूचाल, कांपते थे आकाश-पाताल
मगर बढ़ जाते थे ।
कौम के परवाने, हुए देश के दीवाने
शीश तली धर झूमते थे ।
करो याद रानी झांसी, जान फाँसी को ही हाँसी
रस्सी हँस हँस चूमते थे ।
गले फाँसी का फन्दा डाल, बजात हथकड़ियों की ताल
नाचते गाते थे ।

नया जमाना तथा पुराना गीत नं. 40

नया जमाना और पुराना, दोनों जरा मिलाना ।
नई रोशनी के मतवालो, पढ़ो इतिहास पुराना ।।

आज्ञा मान पिता की बन में, चौदाँ बरस गुजारे।
राम लखन से भाई थे, भारत माँ के प्यारे।
युवक आज का दिखलाता है, बाप को पागलखाना !
रावण के महलों को सीता पावों से ठुकराती।
देश धर्म की खातिर पद्मा कूद आग में जाती।
आज पिया बीमार छोड़कर, पिक्चर हुई रवाना ॥
योगीराज कृष्ण से नलवा और, अर्जुन के वो तीर वहाँ।
वीर शिवा, प्रताप, हकीकत, बन्दा जैसे वीर कहाँ।
आज जबाँ पर युवकों के है 'हेमा' का ही गाना ॥

भारत के शहीद देश भक्ति गीत नं. 41

कैसे किया गया विपत उठा के आजाद वतन-आजाद वतन।
देश के भगतों पर कैसे अत्याचार ढाए गए।
चौराहों पर खड़े करके बैंतों से उड़वाये गए।
मुँह काले तक करवा के ॥ आजाद वतन……
कइयों को बेकसूर फांसी पर लटकाया गया।
मीना बेचारी को जिन्दा आग में जलवाया गया।
देखो नैलों में उसे बंधवा के ॥ आजाद वतन……
देवता स्वरूप काले पानी में भिजवाए गए।
भगतसिह के बन्द कुल्हाड़े से कटवाए गए।
उन्हें भूना गया तेल डलवा ॥ आजाद वतन……
डायर के फायर ने परले काल के दिखा नजारे।
जलियाँ वाला बाग में सैंकड़ों-हजारों मारे।
उन्हें पीटा गया नग्न कराके ॥ आजाद वतन……
पृथ्वी से आकाश तक हमने शव के पुल बनवाये।
स्वतन्त्रता देवी को लोगा हम तो इसी मार्ग लाये।
ठाकुर कवि आंखें बिछा के ॥ आजाद वतन……

(शहीद भगतसिंह फांसी की ओर जाते हुए)

गीत नं. 42

होने चला हूं बलिदान, मां का ऊँचा निशान,
दिल में भरे हैं अरमान ।।
वीर भगतसिंह आगे बढ़ा है, फाँसी की रस्सी को चूम रहा है।
जिन्दा रहे हिन्दुस्तान ।।
राजगुरु सुखदेव आगे बढ़े हैं अन्त समय में गले खूब मिले हैं।
फाँसी चढ़े जवान ।।
तीनों की लाशों को फौरन उतारा, तेज डमट्टी का उन पर डाला।
बिना कफन जलते जवान ।।

भगतसिंह की घोड़ी बहन ने गाई गीत नं. 43

आओ वी भैनों गावीये घोड़ियाँ भगतसिंह सरदार ने।
मौत कुड़ी नूँ वियावन चलिया जंग होई तैयार वे।
सूली दे तख्ते नूं बीरा खारा बनाया बैठा है चौकड़ी मार वे।
खून दी मैंदी तैनूँ लाई जल्लादाँ, मौली ते हथकड़ी मार वे।
जेल दी टोपी दा वीराँ मुकुट बनाया, झालर मोतियांदार वे।
जंडी ताँ कपी लाड़े जुलम सितम दी, मार के अवर तलवार वे।
वाग फड़ायी तेरी मैन पई मंगदी, सुत्ता है पैर पसार वे।
पैंतीं करोड़ तेरी जंज वे लाड़िया, पैदल ते कई असवार वे।
मातमी बाजे बजदे बुएँ, भारत दे मारु दा राग उचार वे।
कालीयाँ पोशाकां पाके जंजवी तुर गई, असी वी होए तैयार वे।

(चीनो पाकिस्तान तथा भारत नौजवान)

गीत न. 44

(यह गीत युद्ध के समय कई बार रेडियो पर गाया गया)
नौजवानों जंग में चलने का मौका आ गया।

मातृभूमि के लिए मरने का मौका आ गया ।।
हिन्दी-चीनी भाई-भाई हम सदा गाते रहे ।
वे हमारी पीठ पर छुरियाँ चला जाते रहे ।
तोप बम्ब पिस्तौल लो बढ़ने का मौका आ गया ।। मातृ……
शान्ति के संदेश को डाकू नही पहचानते ।
लातों के जो भूत होते बातों से न मानते ।
दुश्मनों को अब कत्ल करने का मौका आ गया ।। मातृ……
नौजवानों खून दो तुम जख्मियों के वास्ते ।
बहनों तुम भूषण उतारो शस्त्रों के वास्ते ।
आज सब कुछ दांव पर धरने का मौका आ गया ।। मातृ……
दूध माता का पिया है आजा तू मैदान में ।
देखना धब्बा न लग जाये वतन की शान में ।
सिर हथेली पर धरने का मौका आ गया ।। मातृ……
जीता पाकिस्तान को राजा तू ही कहलाएगा ।
मर गया तो देश सारा पूजा करने आएगा ।
गीता को इक बार पढ़ने का मौका आ गया ।। मातृ……
भगतसिंह और ऊधमसिंह का कारनामा याद है ।
मौत से जो खेलते थे उनकी तू औलाद है ।
आशानन्द हथियार ले लड़ने का मौका आ गया ।। मातृ……

बहादुर की अर्थी पर गीत नं. 45

लाल मेरे कहां को तू जा रहा, तेरा बापू तुझे बुला है रहा ।
बहन तेरी पड़ी अब बेहोश है, सारा कुनबा है आंसू बहा रहा ।
मेरे पुत्र की मौत से लोगो शादी होने जाती ।
अर्थी आज उठाये जाते लाखों आए बराती ।
प्रण अपना तू पूरा निभा रहा, दूध माता का सफल बना रहा ।।

काठकी घोड़ी से दूल्हे को सबने आज उतारा।
लपटों में खामोश सो गया भारत माँ का प्यारा।
आशानन्द तू स्वर्ग को जा रहा, देवलोक भी है हर्षा रहा॥

श्री रामप्रसाद बिसमिल का फाँसी झूलने से पूर्व गीत नं. 46

सात बजे जिस समय सवेरे, जब मैं फांसी जाऊंगा।
फांसी चढ़ने से पहले मैं संध्या हवन रचाऊँगा।
आप होंगे सैकड़ों शस्त्रबन्द और मेरी जान अकेली है।
तुमने जिसको मृत्यु समझा वह तो मेरी सहेली है।
जेलें काटीं भूखा मरा, सकल तबाही झेली है।
अन्तिम हथियार था फांसी का वह भी बला लि ली है।
फांसी का डर नहीं मुझे ले जन्म दोबारा आऊँगा॥ फांसी

ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर हवन मंत्रों की बोली है।
घृत सामग्री की आहुति इक-इक पिस्तौल की गोली है।
आजादी के जंग में डटकर लड़े जवानों की टोली है।
जो गोली से खून बहेगा वह होली में रोली है।
इस होली का आप देखना मैं तो बला ही जाऊंगा॥ फांसी

कुर्बानी खाली न जाती यह भी तुमको याद रहे।
भारत का बच्चा-बच्चा बन बिस्मिल रामप्रसाद रहे।
जब तक आप रहें भारत में लड़ने का सिंह नाद रहे।
भारत के कोने २ में क्रान्ति की आग लगाऊँगा॥ फांसी

हिन्दू जाति की हालत गीत नं. 47

जानते हो जहाँ तक मेरा ख्याल है।
हिन्दू जाति का कितना बुरा हाल है॥

कहने सुनने की आजहद ये शोकीन है।
वक्त करने का आता तो फिर टाल है।
कोई यज्ञो-पवीत लेकर आर्य बना।
पर घर में पाखंडों का ही जाल है॥
लाखों हिन्दू-मुस्लमाँ ईसाई बने।
शक्ति घटती तुम्हारी हर एक साल है॥
तब तक तबला, सारंगी पिटते रहे।
जब तक आपस में मिलता न सुरताल है॥
तेरे बलिदानों से ही आजादी मिली।
पर तेरा जीना हिन्दू ही मुहाल है॥
सारे भारत में खूँ की नदियाँ बहीं।
उठा जब मुहम्मद एक बाल है॥
तेरे मन्दिर गिरे, तेरी पुत्रि गई।
उल्टा तुझको दिया, जेल में डाल है॥
अपने इतिहास को ही दुहरा दे तू फिर।
फिर गलेगी न गैरों की यूँ दाल है॥

गीत नँ. 48

आजकल हर गृहस्थी मुझको दीखता परेशान है।
सूट टैरालीन का पर खोखली सी जान है॥
छोटी सी एक बात पर पति-पत्नि लड़ रहे।
वारते जो जान भाई वार वो ही कर रहे॥
न किसी की इज्जत है और न किसी का मान है।
ब्रह्म मुहूर्त में प्रभु का गीत जो गाते कभी॥
शरण प्रभु की आओ रे घर-घर सुनाते ये कभी।
चारपाई पर पड़े हैं, होता फिल्मी शान है॥

वोर देवी गीत नं. 49

बहनो बांधो कमर उठो अपना जौहर तुम दिखाओ ।
देश भारत की बिगड़ी बनाओ ।।

बाल थे आपके कसे २ धरती कांपी थी कुल जिनके भय से ।
मौत और जिन्दगी, समझें इक दिल्लगी, ऐसे जाओ ।।
गरजा पूजा में देहली हिलादो, पहुँचा देहली तो हलचल मचा दो ।
शवा सा शेर कर पैदा दो कोई कर आए माताओ ।।

शेरां वाली की पुकार गीत नं. 50

आर्य वीरो उठो और मैदां में डटो आगे आओ
झूठे भक्तों से मुझे छुड़ाओ
शेरां वाली तुझे कहते माता, सारा संसार दर्शन को आता ।
देखो दीना नगर, काट बच्चे का सर बलि चढ़ा ।। झूठे......
बाल दुखिया तो मां दुखिया होती, अपने आंसुओं से मुखड़े को धोती ।
बच्चा छाती लगा कर रही जग्रता प्रभु बचाओ ।। झूठे......
ईंट पत्थर तुम्हें खाने होंगे भोले भाई बचाने होंगे ।
दयानन्द ऋषि बन, आया समय है कठिन, न घबराओ
पाखण्ड खण्डनी को उठाओ ।। झूठे......

देविया गीन नं. 51

भारत की पुण्य भूमि में हुई हैं ऐसी नारियां ।
विदुषी वीरांगना थी, और धर्मधारियाँ ।।
वेद वक्ता गार्गी, यहां गुणवन्ती थी ।
अनसूया और सुलभा सीता सतवन्ती थी ।
पद्मिनी की थी कभी चिता पर सवारियां ।।

राजसुख त्यागा जिसने सुखपे लात मारी थी।
महीद्रा कुमारी जो अशोक की दुलारी थी।
भिक्षुणी बनी थी कभी राजों की दुलारियां॥
भूषणों को दूषण नहीं सर्वथा बताती थी।
शीशफल और कंगन अंग पे सजाती थी।
लेकिन सदा रखती कमर में कटारियां॥
मक्खन से नर्म कभी हमने इन्हें पाया है।
फूल से भी सुन्दर रूप इन्होंने बनाया है।
कभी देखा खून की चलाती पिचकारियां॥

गाए माता गीत नं. 52

गैया मैया करे पुकार, कहाँ गए वो आर्य कुमार।
रामराज्य में आकर देखो, चलती है मुझ पर तलवार॥
योगीराज महाराज कृष्ण ने, मुझको जब अपनाया था।
नगर नगर और ग्राम-ग्राम में दूध का प्याऊ लगाया था
मक्खन घी सब खाते थे, रोग निकट नहीं आते थे।
जग के गुरु कहाते थे, ज्ञान का था भारी भंडार॥
ऋषि दयानंद स्वामी ने जब, मेरी सुनी कहानी थी।
करुणानिधि ने गऊकरुणा में, मेरी कथा बखानी थी।
दुःख मेरा न सहते थे नीर नयन से बहते थे।
रो रो कर वे कहते थे प्रतिदिन कटती कई हजार॥
सत्याग्रह का बापू ने जब देश में बिगुल बजाया था।
जीती गाय नहीं कटेगी, ये विश्वास दिलाया था।
राज के मद में फूल गए, वचन किए सब भूल गए।
सूद गया और मूल गए, माँस मदिरा का व्यापार॥
जीती गैया को कटवाकर, बाहर माँस पहुँचाते हैं।
बकरा, मुर्गे, अण्डे खाकर, गौ वध और बढ़ाते हैं।

भारत को करते बदनाम, बापू जी का लेते नाम ।
बगल छुरी और मुँह में राम, ऐसे राज पर है धिक्कार ।।
हमने भी यह किया है निश्चय जीवन में भेंट चढ़ाएँगे ।
बूचड़ खानों को तोड़ेंगे, गौ वध बन्द कराएँगे ।
आशानन्द दो शक्ति दान, हमने रचा है यज्ञ महान ।
बचा सकें गऊ मां के प्राण, बह जाये यहाँ गऊ दूध की धार ।।

आरती कुर्सी माता की

एम. पी. बनने की आरती गीत नं. 53

तेरी जय कुर्सी माता, तेरी जय कुर्सी माता ।
सखा स्नेही तूही, पिता, माता, भ्राता ।। तेरी ।
एक बार तुझको पा जाऊँ, हृदय यही है चाहता ।
तू ही मेरा धर्म-कर्म, रिश्ता और नाता ।। तेरी ।
जनता, कांग्रेस बहुत बुरे हैं, रोजाना बतलाता ।
टिकट मिले तो रात-रात में भेष बदल जाता ।। तेरी ।
सदस्य बनकर लोकसभा में यदि पहुँच जाता ।
चांस मिनिस्ट्री का मेरा फौरन आ जाता ।। तेरी ।
श्रद्धा प्रेम से कुर्सी माता की आरती जो गावे ।
पांच साल तक वह प्राणी मन वांछित फल पावे । तेरी ।
सुन्दर सी एक कार मिले कोठी बन जावे ।
लाखों रुपया रिश्वत भ्रष्टाचार से आ जावे ।। तेरी ।
ईश्वर धर्म गाय की चर्चा ना वाणी पर लावे ।
अण्डा, मुर्गी, बकरा, मछली सब चट कर जावे ।। तेरी ।

हिन्दू वीर गीत नं. 54

ऐ वीर बहादुर हिन्दू तू सोया है चादर तान आंखें अब खोल ।
सेवा प्रताप दयानन्द की तू है प्यारी सन्तान आंखें अब खोल ।।

तू देश पे बलि-बलि जाता था, और अंग-अंग कटवाता था।
तू बाल हकीकत बन करके सर अपना भेंट चढ़ाता था।
तू खाल खिचाकर चिमटों से हो गया है लहू लुहान।
वह प्यारा श्याम प्रसाद तेरा कश्मीर से वापिस आ न सका।
उसकी अर्थी को देख देख अब्दुल्ला शेख यह हंसता था।
तेरा कर्तव्य पुकार रहा तू उसको कर पहचान॥
तू पाप के सन्मुख लड़ता था और जेल में जाकर सड़ता था।
तू वीर भगत सिंह बन करके हँस-हँस कर फांसी चढ़ता था।
तू चांदनी चौक के अन्दर भी खडा था छाती तान॥
तेरे देश में भ्रष्टाचारी है रिश्वत की बड़ी बीमारी है।
खड़ी है माता धूप में आकर नीर नयन से जारी है।
उसे मिला न आटा एक किलो भूखी सो गई सन्तान॥
यदि चीनी पाकिस्तानी से देश बचाना चाहता है।
यदि गौ माता की गर्दन से तलवार हटाना चाहता है।
आशानन्द कफन बांध के आ दे दे जाति को प्राण॥

आज कल का राज्य गीत नं. 55

राम राज की नगरों में कैसी आजादी आई है।
हर तरफ से चीखें आती हैं और आती राम दुहाई है॥
भारत में आज अकाल पड़ा बच्चे फाकों से मरते हैं।
कई घास और पत्ते खा खाकर पेट अपना भरते हैं।
कइयों को ये भी मिल न सका और तड़प के जान गंवाई है॥
इक हड्डियों का पिंजर देखा जो सड़क किनारे लेटा था।
सब छोड़ गए रिश्ते उसके और स्वाँस ही अन्तिम लेता था।
भूखे कुत्तों ने भूखे पर अपनी नजर टिकाई है॥
कोईचीज यहाँ शुद्ध मिलती नहीं बाजारमें तुम आजमा देखो।
दूध, दवाई, सब्जी को इक बार स्वयं तुम खा देखो।
करपटिड कन्ट्री की दुनिया में भारत ने पदवी पाई है॥

राशन की दुकानों पर देखो न चीनी है न आटा है।
पैसे के पहिए लग जाएँ जितना चाहो घर आता है।
इधर धूप में खड़ी कतारें और पर्ची हाथ उठाई है।।
नौ सौ कमरों में भारत के श्री राष्ट्रपति जी रहते हैं।
फुटपाथों और झुग्गियों में खून कइयों के बहते हैं।
हर आफिस जाओ रिश्वत है, गांधी की फोटो लगाई है।।
भारत के नौजवानों को मैं देख देख थर्राता हूं।
ईट ड्रिंक एण्ड बी मैरी का नारा ही सुन पाता हूं।
न धर्म कर्म न शर्म रहा न बहन रही न भाई है।।
शासन की यही अवस्था रही तो मैं बाणी भविष्य सुनाता हूं।
गीता रामायण मिट जायेंगे, मैं हिन्दुओं को बतलाता हूं।
यहाँ होगा राज मुसलमानी या होगा राज ईसाई है।।

बलिदान की पुकार गीत नं. 56

करना है बलिदान हमें तो करना है।
जो तुम भाई बने हो आर्य, शीश दे दियो धर्म के कार्य।
हँस हँस विष को पान, हमें तो करना है।। करना…
ऋषि ने जो मार्ग दिखलाया, श्रद्धानन्द ने है अपनाया।
लेखराम कुर्बान, हमें तो करना है।। करना…
माता के अब टुकड़े हो रहे, आर्यवीरो कैसे सो रहे।
भारत का कल्याण हमें तो करना है।। करना…
कहाँ गई वो तेरी जवानी, खून तेरा क्यों बन गया पानी।
माँ पर कष्ट महान, हमें तो करना है।। करना…
पंथ को खतरा कोई बताए, ईसा स्थान के गीत कोई गाए।
अखण्ड हिन्दुस्तान, हमें तो करना है।। करना…
देश में जन्म लिया है तूने, माँ का दूध पिया है तूने।
माता का सम्मान हमें तो करना है।। करना…

आशानन्द अब घर-घर जा तू, सोया हिन्दू वीर जगा तू।
भेंट चढ़ा दे प्राण हमें तो करना है ।। करना···

देवियों के लिए गीत नं. 57

हम नारियों पे ऐ प्रभु उपकार कीजिए।
तेरी शरण में आई हैं उद्धार कीजिए।।
ऋषि मुनी और योगी भी तुझको ध्याते हैं।
वेदों के मन्त्र भी तेरी महिमा सुनाते हैं।।
मझदार में पड़ा है बेड़ा पार कीजिए।। तेरी···
न बल है न बुद्धि है तेरा है आसरा।
विषयों में फंस के हमने जोवन दिया लुटा।
पुत्री बनाने से न अब इन्कार कीजिए।। तेरी···
हम देवियों के नाथ तुम्हीं हो पिता माता।
इस वास्ते संसार तेरी शरण में आता।
गोदी बिठाने से अब न इन्कार कीजिए।। तेरी···

देवियों के लिए गीत नं. 58

ललनायें हों तैयार, लेकर तलवार, भगें व्यभिचारी।
सुखमय हो सृष्टि सारी ।। टेक ।।
बन चण्डी रण में डट जायें, सब क्लेश जगत के हट जाएं।
पाए न ढूंढे भी कोई अत्याचारी ।। सुखमय···
फिर वीरों का युग ले आएं, खोये हुए धन से सज जायें।
कहलाय देवी देवों की महतारी ।। सुखमय···
इतिहास यही बतलाता है, मुर्दों में जीवन लाता है।
लख किरणमई और झांसी वाली नारी ।। सुखमय···
बन जाओ जो अंगारा फिर निज देश का हो सहारा।
वह सत्य कहां जो दयानन्द ब्रह्मचारी ।। सुखमय···

अपने आप से पूछो गीत नं. 59

मुर्गे नित मारते हो कभी मन को भी मारा करो।
जीने का भी चारा करो जाना भी विचारा करो ॥
ओ धन वालो निर्धन का दिल देखो कभी टटोल के।
दूध पिलायें बच्चों को पानी में आटा घोल के।
इन दर्द के मारों का दुःख दर्द सहारा करो ॥ जीने…
लाल आपके सर्दी में शालों में लिपटे होते हैं।
उनका भी अनुभव करो सड़कों पर नंगे सोते हैं।
झांकी मजदूर की भी सीने में उतारा करो ॥ जीने…
देखो यतीम के माथे की धुंधली तस्वीर पुकारती है।
सड़कों पे पड़े उस नन्हें की फूटी तकदीर पुकारती है।
कभी गोद बिठाने का इनको भी इशारा करो ॥ जीने…
विधवा के उलझे बालों में जज्वे कई उलझे रहते हैं।
हृदय के छाले फूट-फूट आंखों से बहते रहते हैं।
यों तीर अभागन को तानों के न मारा करो ॥ जीने…
नत्थासिंह मेहनती बन्दों में इन्सान के दर्शन होते हैं।
निर्धन के ही मन मन्दिर में भगवान के दर्शन होते हैं।
बस्ती में गरीबों की ईश्वर को पुकारा करो ॥ जीने…

महर्षि की जीवन कथा गीत नं. 60

दयानन्द के दर्शन तुम्हें कराते हैं।
सोने वाले आर्यो तुम्हें जगाते हैं ॥
चला मूल मूल को मिलने, शंकर के दर्शन करने।
पर देखा एक तमाशा, लगा चूहा देव पर चढ़ने।
नैन खुल जाते हैं, सोमनाथ के सीन सामने आते हैं ॥
बन बन के कष्ट उठाते, और बर्फ भूख में खाते।

कांटों ने ऐसा काटा, बस खून खून हो जाते।
पर कदम बढ़ाते हैं, प्रभु प्यारे दुखों से न घबराते हैं ।।
आखिर मथुरा में आया, गुरु का द्वारा खटकाया।
तू कौन कहां का बासी, विरजानन्द ने प्रश्न उठाया।
यह जानना चाहते हैं, अपनी बीती स्वयं ऋषि बतलाते हैं ।।
डंडी ने डंड से टटोला, फिर ज्ञान भण्डारा खोला।
पाखंड का खंड खंड करदो, दो दक्षिणा यह गुरु बोला।
सीस झुकाते हैं, ब्रह्मचारी रणक्षेत्र खड़े हो जाते हैं ।।
न पास था पैसा धेला, और न कोई चेली चेला।
सम्पत्ति थी एक कमण्डल, और ईश्वर संग सहेला।
धूम मचाते हैं, गंगा तट पर ओम् ध्वजा लहराते हैं ।।
कहीं गैया रुदन मचाती, कहीं बच्चे को माँ बहाती।
लाखों हिन्दू बने विधर्मी, देखा जाति यह जाती।
पतित उठाते हैं, नाई के घर जाकर भोजन पाते हैं ।।
पहलवानों को हाथ दिखाते, फँसी गाड़ी पार लगाते।
सिंह संग न कुतिया साजे, दरबार में गर्ज सुनाते।
विष पी जाते हैं, दक्षिणा हो गई पूरी ऋषि फरमाते हैं ।।
मेरी राख खेत में देना, स्वामी यह वसीयत करते।
प्रभु इच्छा हो तेरी पूरन, अब ओ३म् ओ३म् हैं जपते।
विदेह हो जाते हैं, गुरुदत्त जैसे नास्तिक नीर बहाते हैं ।।
श्रद्धानन्द ने राख उठाई, दिल्ली में गोली खाई।
बलिदान हुआ मुसाफिर और पुत्र की भेंट चढ़ाई।
शहादत पाते हैं लेख बन्द न हो लेख समझाते हैं ।।
क्यों भूले कस्तूरा माई, जिस असुअन झड़ी लगाई।
लौटा दे कोई मेरा हीरा, भूखी मर जाऊँ भाई।
मस्जिद में जाते हैं, अब्दुला गांधी को हम लौटाते हैं ।।

हैदराबाद में बिगुल बजाया, अभिमानी का शीश झुकाया।
आर्य वीर मौत से खेले पर पग न पीछे हटाया।
विजय कर आते हैं, निजामी को डाल नकेल पटेल बतलाते हैं।।
फांसी चढ़ने से पहले यज्ञ सामग्री मगवाई।
शेखर भगतसिंह बिस्मिल सब आर्य वीर थे भाई।
झूलने जाते हैं सरफिरोशी के गाने फिर गाते हैं।।
कल मैं थी पैर की जूती, पर आज हूं इन्दिरा गांधी।
धन्य आर्य समाज दयानन्द जिस दूर की पाप की आंधी।
पुष्प चढ़ाते हैं, श्रद्धा भक्ति से अपना शीश झुकाते हैं।।
ऋण उनका आज चुकादो, सारे विश्व को आर्य बनादो।
देश धर्म की खातिर, यह जीवन भेंट चढ़ादो।
अमर पद पाते है, 'आशानन्द' इतिहासों में नाम लिखाते हैं।।

(संतों से पुकार) गीत नं. 61

साधु संत महन्तों आगे आओ तुम।
भारत माता रोती धीर बंधाओ तुम।।

देता इतिहास गवाही, जब देश पे विपदा आई,
माला घुमानी छोड़ी, और हाथ से खड़ग घुमाई।
वैरागी बन जाओ तुम, जाति खातिर बच्चे भेंट चढ़ाओ तुम।।
विश्वामित्र सभा में आता, और राम लखन ले जाता।
इन्हें युद्ध करना सिखलाता, और राक्षस खत्म कराता।
वो शंख बजाओ तुम, शत्रु सुनकर भागे प्रलय लाओ तुम।।
रामायण में आता, उठ प्रातः समय रघुनाथा।
मात-पिता गुरुजन को प्रतिदिन है शीश झुकाता।
चौपाई गाओ तुम, पर जाति के बच्चे न वीर बनाओ तुम।।
प्रताप शक्ति दो भाई, भालों से करें लड़ाई,
गुरुदेव दोनों को रोकें, पर न की किसे सुनाई।
बलि चढ़ाओ तुम, भालों के बस बीच खड़े हो जाओ तुम।।

गुरु रामदास समरथ ने, समरथ बालक इक पाया।
नीति सब दाव सिखाए, सचमुच समरथ बनाया।
भगवा उठाओ तुम, मर के हटे मरहटे आज सजाओ तुम ॥
संन्यासी और नागे स्वयं है मौज उड़ाते,
ये जग सारा है झूठा, हमको उपदेश सुनाते।
होश में आओ तुम, दे-दे दान इन्हें न पाप कमाओ तुम ॥
उपकारी संतों का हम करते हैं सत्कार,
भिखमंगे चोर उचक्के को देते हैं धिक्कार।
नियम न भुलाओ तुम, स्वयं भी बचो औरों को आज बचाओ तुम ॥
दयानन्द वो वेदों वाला, प्रचार का व्रत ले आया,
इसके सारे थे अपने, और अपनों ने जहर पिलाया।
बलि-बलि जाओ तुम, ऐसे संत गोपाल मिशन में लाओ तुम ॥
(आशानन्द भजनीक)

(देश के साधू से) गीत नं. 62

साधु, सन्तों, ऋषियो, मुनियो होश में न तुम आओगे।
रंग गेरवे को अपने हाथों आप ही दाग लगाओगे ॥
कभी भी मन को शांति देने तीर्थ तट पर जाता हूं।
बिल्कुल नंगे और मुस्टंडे की लगी कतारें पाता हूं।
शर्म को भी शर्म है आती, पर तुमतो शर्म न खाओगे ॥
डाकू कातिल और लुटेरे इस भेष में फिरते हैं।
दिन को तो वो हैं संन्यासी, रात चोरियां करते हैं।
इन भिखमंगों के फंदे से कब छुटकारा पाओगे ॥
मुझसे कहते गीता पढ़नी, गीता भक्त दिलादो तुम।
कोई कहे मैं माला फेरूं, माला को पकड़ा दो तुम।
गीता माला मेरे फिरते फिर गए, पैसे ले ठेके जाओगे ॥
तीस हजार गाय नित कटतीं, कटती हैं कट जाने दो।

हिन्दू जाति घटती जाती, घटती है घट जाने दो।
भोले भक्तो इन गुरुग्रों के कब तक चरन दबाग्रोगे।।
पचास लाख है इनकी गिनती, गवर्नमेंट बतलाती है।
कई करोड़ का प्रतिदिन जाति इनका बोझ उठाती है।
तुम समझाने से न समझो, हिन्दू नाम न पाग्रोगे।।
ग्रन्धा, लूला, लंगड़ा मांगे, फौरन दान दिला देना।
इन मुस्टंडे नशाबाजों को जूता एक दिखा देना।
ग्राशानन्द तुम यथा योग की नीति कब ग्रपनाग्रोगे।।

गीत नं. 63

साधु समाज ये सारा जब जग जाएगा।
फिर से भारत जगत गुरु कहलाएगा।।
मेरे राज में चोर नहीं है, ग्रौर न कोई है व्यभिचारी।
सुख-चैन से प्रजा रहती ग्रौर जेलें खाली सारी।
इक राजा ग्राएगा, भोजन करो ऋषिवर शीश झुकाएगा।।
ग्रब तो ग्रनपढ़ संन्यासी, दर-दर की भिक्षा करते,
क्या देंगे हमको शिक्षा, वो ग्रपनी झोली भरते,
दुकां पर ग्राएगा, बेच के माल तुम्हारा गांजा लाएगा।।
जब सिकन्दर यूनान से ग्राता, सुकरात से फरमाता,
ब्रह्मज्ञानी कोई हिन्द से लाना, मैं रहूंगा चरण दबाता।
समय फिर ग्राएगा, तोता मैना पिंजरे में मंत्र सुनाएगा।।
यहां गुरु हैं लाख पचास, होता देश का सत्यानाश,
चारों शंकराचार्यों से हम करते हैं ग्ररदास।
कोई जो सुन पाएगा, 'ग्राशानन्द' गीत उसी के गाएगा।।

निर्धन बेटी दहेज की बलि वेदी पर (गीत नं. 64

निर्धन दुल्हन चाँद सा मुखड़ा, दूल्हे के घर ग्राई है।
माता पिता ग्रौर संग सहेली ने रो-रो दी विदाई है।।

जिसने अपनी बेटी दे दी, मानो सब कुछ दे ही दिया।
पुत्री की इज्जत की खातिर, करजा तक भी ले ही लिया।
स्वागत करते सास ने पूछा, क्या दहेज में लाई है॥
टी० वी०, फ्रिज, टीके में देंगे, एक लड़की वाला कहता था।
डेढ़ लाख शादी पर खरचा, नई दिल्ली में रहता था।
फुट गई तकदीर हमारी, हमने क्यों ठुकराई है॥
लालची सास ससुर को देखो ताने के तीर चलाते हैं।
लोभी पिता के लोभी बेटे बोल के घाव लगाते हैं।
आँसू अपने पी-पी कर, इस घर की व्यथा सुनाई है॥
मेरे रोगी माँ बाप ने, पचास हजार लगाया है।
दो जवान बहनें और बैठीं, उनका फिकर सताया है।
इन पर तो कुछ असर हुआ न, हाँ इक स्कीम बनाई है॥
रात को सारे फाटक बन्द कर, पति ने गला दबाया है।
सास ने तेल कनस्तर डाला, ससुर ने माचिस दिखाया है।
गरीब की लाडो ने जल जल कर सुहाग की रात मनाई है॥
घोर अन्धेरे में शव इसका मरघट में ले जाते हैं।
तार मिली मरने की बूढ़े ढायें मारते आते हैं।
यह दहेज तो हजम हो गया और नई शादी रचाई है॥
बड़े-बड़े नेता स्टेज पर दहेज विरूद्ध ही बोलते हैं।
मैंने देखा अपने पुत्रों को लाखों से वह तोलते हैं।
आशानन्द शादी बिजनेस है तेरी करनी न किसी सुनाई है॥

गीत नं. 64

प्राणों के भी प्राण हो सर्व शक्तिमान हो।
तेरे दर पे झोली डालो बच्चों के भगवान हो॥
रजनी, गन्धा और चमेली तब मस्ती में झूम रही।
सुन्दर साड़ी तितली पहने कली कली को चूम रही।

चकोर के तुम चन्द ही फूलों में सुगन्ध हो।
लहराते खेतों की भगवन तुम मीठी मुस्कान हो ।।
ऋषि मुनि, राजे महाराजे तेरे ही गुण गाते हैं।
सूरज चांद सितारे दाता तेरी याद दिलाते हैं।
कू कू कोयल करे पुकार पी-पी में है तेरा प्यार।
पंख फैलाए नाच रहा है मोरों के अरमान हो ।।
कीच के अन्दर छुपकर भगवन कैसे कमल सजाते हो।
सागर में तुम सीप बनाकर फिर मोती चमकाते हो ।।
कहीं बादल बरसा दिया, इन्द्रधनुष दिखला दिया।
देकर जीवन जीवों को करते सबका कल्याण हो।
प्रातः सायंकाल हमेशा तेरे ही गुण गाया करें।
हृदय मन्दर के अन्दर बस तेरी जोत जगाया करें।
प्राणी मात्र से प्रेम सिखा जीवन दें बस भेंट चढ़ा।
नौका परले पार लगा इच्छा पूरी भगवान हो ।।
भोले वाले बच्चों को यह भिक्षा आज दिला दे तू।
उजड़ गई है मन की बस्ती इसको फिर बसा दे तू।
विनय मेरी मंजूर करो आशानन्द के दुखड़े दूर करो।
विद्या से भरपूर करो दूर मेरा अज्ञान हो ।।

(भारत की नारी) गीत नं. 68

हम भारत वर्ष की देवियाँ हैं सभ्यता की शान कहाती हैं।
जब देश पे बिपता आती है सब दुर्गावती बन जाती हैं ।।
पूछो मेवाड़ के वीरों से कई बार हम खेलीं तीरों से।
कभी सूलों पर कभी फूलों पर कभी चिता पर सेज बिछाती हैं ।।
छल-कपट पाप अन्याय से जो हम पर आँख उठाते हैं।
हम तड़प-तड़प कर गिरती हैं कई जानें जान गंवाती हैं ।।
दिल रणधीरों का तोड़ती हैं और मुंह शेरों का मोड़ती हैं।
इन कोमल कोमल हाथों में तीखी तलवार उठाती हैं ।।

वीर नारी गीत नं. 65

भारत की देवियों को सारा जग सीस झुकाए।
लीला और गार्गी तो ऋनियों की पदवी पाए ।।
सीता, सावित्री, दुर्गा, पद्मा की होती पूजा।
पतिव्रत धर्म निभाया लाखों पर कष्ट उठाए ।।
कैसी बलवान थीं वह, सिंहनी समान थी वह।
अकबर की छाती पर चढ़, किरण ने पाठ पढ़ाए ।।
धोबी ने दोष लगाया राम ने जंगल पहुँचाया।
लव कुश को किस जा जाया देखो इतिहास उठाए ।।
विद्या का थी वह खजाना इसको सब जाने जमाना ।।
देश के विद्वानों के बहनों ने मान मिटाए।
शस्त्र चलाने वाली, शास्त्र पढ़ाने वाली ।
प्यारी विद्योतमा का दूँ मैं इतिहास सुनाए ।।

लावारस भारत गीत नं. 66

भारत देश का रखवाला कोई आज नहीं।
वह पटेल लोहे वाला कोई आज नहीं ।।
सुबह को हम जब दफ्तर जाएं पता नहीं आएं न आएं।
इस भय को भगाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल...
जिधर देखा है गुण्डागर्दी चाकू चलता गोली चलती।
छुरियों से छुड़ाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल...
लाला जगतनारायण जैसे देश भक्त थे सच सच कहते।
उनका बदला चुकाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल...
नया पाकिस्तान बनाते खालिस्तान भी कुछ हैं चाहते।
हिन्दोस्तान बनाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल...
डाकू हैं पर सन्त कहाते पंजाब में देखो आग लगाते।

पर इनको गिराने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल···
राजा ने तलवार निकाली दयानन्द टुकड़े कर डाली ।
ऐसा टूकड़े बनाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल···
शेरां वाली की जय जय करते राम कृष्ण के स्वांग हैं भरते ।
रावण का बंश मिटाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल···
देश में जन्म लिया है तूने मां का दूध पिया है तूने ।
दूध सफल बनाने वाला कोई आज नहीं ।। वह पटेल···
फिल्मी ढंग से गाने गाते पाउडर क्रीम मल स्टेज पर आते ।
मन की तार बजाने वाला कोइ आज नहीं ।। वह पटेल···
कुर्सी खातर डोल रहे हैं, बोतल बंडल खोल रहे हैं ।
राम राज का लाने वाला कोई आज नहीं ।। बह पटेल···
आशानन्द तेरी काया पुरानी भावों में पर जोश जवानी ।
सुखलाल सा गाने वाला कोई आज नहीं ।। बह पटेल···

(सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव) गीत नं. 67

एक समय की बात सुनाऊँ, सुनो कान सब खोल ।
सत्यार्थ प्रकाश का मित्रो, मैं क्यों बजाऊँ ढोल ।।
पाकिस्तान में एक नगर है नाम उसका मुल्तान ।
काफी साल हुए घटना को बात तू साची जान ।।
मुसलमान ईसाईयों के बहां हो रहे व्याख्यान ।
वह कहते अंजील है झूठी वह कहते कुरान ।।
चैलेंज पर चैलेंज लगे होने छापे खूब अखबार ।
शास्त्रार्थ करने का दिन निश्चय हो गया आखरकार ।।
अब्दुलहक मशहूर पादरी और फादर कई पधारे ।
कुरान के हाफिज दाड़ी वाले सजधज पहुंचे सारे ।।
आस पास के लोग हजारों देखने आए मेला ।
मैं भी जलसा देखने लोगो घर से चला अकेला ।।

बड़ा भारी पण्डाल बना था बीच में दो मंच सजे थे।
शास्त्रार्थ जब शुरू हुआ तो दिन के दस बजे थे ।।
दांयी ओर मुसलमान थे और बांयी ओर ईसाई ।
बीच में एक आर्य संन्यासी सदर बिठाया भाई ।।
मौलाना के हाथों देखा सत्यार्थ प्रकाश ।
प्रश्नों की झड़ी लगा दी खोला तेरहा सम्मूलास ।।
अब्दुलहक पादरी के कर में दयानन्द का ग्रन्थ ।
चौदहवां अध्याय पढ़ पढ़ कहता झूठा तुम्हारा पन्थ ।।
आर्य संन्यासी इस अवसर पर जो प्रधान बने थे ।
दोनों हाथ सत्यार्थ देखकर कुर्सी से उछल रहे थे ।।
छः घन्टे तक चला ड्रामा किसे न मानी हार ।
आशानन्द जब नारे लगाता ऋषि की जय जय कार ।।

(बुराई के भिक्षुक) गीत नं. 68

आए सेवक तेरे ठिकाने सेवक भूल न जाई ।
शराब दा पीणा मित्रा छडदे, इस पापन नूं घर तो कढ दे ।
कई मुक गए राजे राणे ।।
कुड़ी जबान तेरी नंगी फिरदी खबर न तैनू रोगी ढबर दी ।
पीके गालां लगा सुनाने ।।
भुला होया जो शाम नूं आए ओह वी भुल्ला न कहाए ।
आ मुल्ला नूं बक्शाने ।।
बाल्मीक ऋषि श्रद्धानन्द नूं याद करलै अमीचन्द नूं ।
ओह बने देश परवाने ।।
भुल अपनी नूं भुल जा प्यारे सत्संग करके धुल जा प्यारे ।
नौका आई जे पार लगाने ।।
एह साधु आए तेरे दर ते दे दे बुराई साडी झोली भर दे ।
छड दे सारे बहाने ।।

अन्ने दी अन्नी औलाद बताई महाभारत दी जंग कराई।
द्रौपदी ने दित्ते ताने ।।
मैंड़े मन्दे बोल न बोलीं अमृत दे विच विष न घोली।
आशानन्द सुनांदा गाने ।।

(हिन्दू वीर के भाव) गीत न. 69

हिन्दू नूँ हिन्दी दी शान ते, मरना सिखाया जायेगा।
शिवा जी, राणा प्रताप दा डंका बजाया जाएगा ।।
भीम की गदा हो फिर, अर्जुन के उस गांडीव को।
शाम मुरारी दा चक्र, फिर से चलाया जाएगा ।।
राम लखन और भरत का, फिरसे प्रेम भाई-भाई का।
रामजी के राज का नक्शा बनाया जाएगा ।।
खिलजी को खिड़की में देखकर पृथ्वी का तीर मारना।
सिकन्दर ते पोरस दी जंग दा, किस्सा सुनाया जाएगा ।।
जीजाबाई ते पद्मिनी, कुन्ती दिया बल्ला सुना।
भारत दी हर इक नारी नूं दुर्गा बनाया जाएगा ।।
ईश्वर ने ये मेहर कीती, फिर प्यारे एक दिन।
सारे जहां ते ओम दा झण्डा लहराया जाएगा ।।

आवश्यक सूचना

अपने परिवार को सुधारने के लिये आर्य-जगत साप्ताहिक पत्रिका मंगवाकर अनुभव कीजिये।

मंत्री, आर्य प्रादेशिक सभा,
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

मुद्रक : यादव प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली-6